

समय का सुदुपयोग

समय धन ही मूलमान होता है, कभीकी अगर इस रूपया की उ खर्च कर दें तो उसे वापस लिआ जा सकता है, लेकिन समय की बर्बाद किया जाय तो वो क्वत्त वापस नहीं लिआ जा सकता। "कल करे सो आज कर, आज करे सो उन" अर्थात् आज का कार्य कल पर छोड़ना नहीं चाहिये। समय पर काम करने वाला व्यक्ति अपना अच्छा करता है। समय का सबसे बड़ा शत्रु आलस्यपन है। आज कल के बच्चे सुदृष्टी के दर्शन घर पर रहते हैं, रात के बच्चों के यह प्रभाव होता है। "आज करे सो कल कर, कल करे सो परशे" जिससे उनकी स्वयं की ही हानि नहीं होती, बल्कि देश को भी भारी नुकसान का सामना करना पड़ता है। इसलिए समय का सुदुपयोग करना चाहिये।